

**RAJU HAS TB AND AIDS AND LIVES ON THE STREET\****Rupa Chinnai*

While Mumbai prepares to sleep, Raju the masseur goes out to look for work. He is a pavement dweller, 40 years old and emaciated, partly from alcohol and drug addiction. He also has tuberculosis and AIDS. Despite the pain of his condition, Raju has to work in order to eat well enough to go through another day of heavy medication. If taken on an empty stomach, the high-potency TB drugs — which are provided free of charge by the municipal corporation — could produce side effects of weakness, giddiness, nausea or fever. Raju looks for clients every night in the hope that he can earn the 60 rupees that would just about get him two meals.

Raju came to Mumbai, like thousands of others from rural India, in search of a job. He worked as a domestic servant, a bootlegger and a vegetable chopper before becoming a masseur. In the 25 years since he came, he has never visited his home in Katni, a village in the central state of Madhya Pradesh. “With what face can I go back? How can I explain to my parents what I have been doing all these years? I want to go back with something to show for the years I have been away,” says Raju with visible pain. “I have fallen in my own eyes,” he says.

A year ago, Raju realized that his persistent cough and rapid loss of weight could mean serious problems. So he turned to the state-run J J Hospital, which provides free or subsidized treatment for poor patients. He had to stand in a queue for two hours to register as a patient. An X-ray and blood test later, he was diagnosed as

having TB and AIDS. “The doctor told me that I would die, that the drugs are very expensive, that if I have more difficulty I could come back. They gave me two types of pills for four days and nothing more,” he recalls.

Raju turned to the corporation-run Nair Hospital for help. Here he had to wait three hours. They did some tests gave him a packet of biscuits, the same message, and a month’s supply of medicines. “I did not eat those yellow and white capsules because I got fever after a couple of doses. Moreover, a friend, who is partly educated, said these were not TB medicines, so I threw them away,” says Raju.

Miserable and debilitated, Raju then heard about Sankalp, a Non Governmental Organization (NGO) that helped poor patients overcome drug addiction. Raju enrolled for Sankalp’s de-addiction programme. He was sent to the Seewri TB Hospital, the main TB referral centre in Mumbai, where he got some relief.

After his discharge, Raju was referred to the government-run TB dispensary for the DOTS programme in his locality, a facility he had not known about before. The treatment included a course of 60 injections, but the dispensary did not have syringes. Raju now had the additional expense of a disposable syringe every day.

“I stopped going to that centre for a combination of reasons... the long queues, the indifferent staff, their irregular hours. But, also I could not afford to buy those syringes. And,

---

\*Reproduced from **Bulletin of World Health Organisation 2002, 80, 519-20**

1. News Correspondent, Chennai.

although they never said anything, I felt the staff did not like me because I had AIDS, and because I was poor and lived on the pavement,” said Raju.

However, the doctor at Sankalp persuaded him to resume treatment at another DOTS centre closer to the NGO's office. The one-month break in treatment meant that it had to be started from the beginning again. Sankalp monitors his treatment, counsels him daily, and lets him use its

day-care centre. But the indifference of the staff at the TB centre continues to bother Raju.

However, thanks to the support of Sankalp, Raju's craving for alcohol has subsided. All his energy is focused on earning money to buy food so that the medicines can flush the TB out of his system. Unfortunately, the only food he sure of getting is sub-standard grain and rotting vegetables. The only encouraging thing about his case is that he wants to survive and is trying to.

## राजू क्षय रोगी एवं एड्स रोगी है तथा सड़कों पर रहता है\*

रूपा चिन्नै ।

जब मुम्बई सोने की तैयारी करती है, अंगमर्दक राजू काम की तलाश में निकलता है । वह फुटपाथों पर रहनेवाला है, 40 साल का है और अंशतः शराब से और ड्रग की लत से कृश हुआ है । वह क्षय रोगी और एड्स का भी रोगी है । अवस्थाजन्य दर्द के बावजूद , राजू को बहु दवाओं युक्त एक और दिन के यापन के लिए अच्छा खाना पडता है, जिसके लिए उसे काम करना पडता है । खाली पेट खाने पर, उच्च प्रभविष्णुतावाली क्षय रोग की दवाएँ , जिन्हें नगर निगम द्वारा निःशुल्क उपलब्ध कराया जाता है, कमजोरी, चक्कर, उल्टी अथवा बुखार के अतिरिक्त प्रभावों को उत्पन्न कर सकती हैं। राजू हर रात ग्राहकों को तलाशता है, इस आशा के साथ कि उसे दो वक्त का खाना मिल सकेगा ।

ग्रामीण भारत के हजारों अन्यों के जैसे, राजू नौकरी की तलाश में मुम्बई आया । अंगमर्दक बनने से पहले वह घरेलु नौकर, जूता साफ करनेवाला तथा सब्जी काटनेवाले के रूप में काम करता था । यहाँ आने के 25 वर्षों में वह कभी मध्य प्रदेश के अपने गाँव कटनी नहीं गया । राजू दर्द के साथ कहता है कि “ मैं क्या मुँह लेकर वापस जाऊँगा? मैं उनको क्या बताऊँगा कि इतने साल मैं क्या कर रहा था ? जितने दिन मैं दूर था उसके लिए मैं वापस कुछ ले जाना चाहता हूँ” वह कहता है कि “ मैं अपनी आँखों में खुद गिर गया हूँ।”

एक साल पहले राजू को बोध हुआ कि उसकी निरंतर खाँसी और वजन में गिरावट गंभीर समस्याओं के कारण हो सकती है । इसलिए वह राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे जे.जे.अस्पताल गया, जो गरीब रोगियों को मुफ्त एवं आर्थिक सहायता प्राप्त चिकित्सा उपलब्ध कराता है । रोगी

के रूप में पंजीकरण कराने के लिए उसे दो घंटे कतार में खड़ा रहना पडा। एक्स-रे तथा रक्त परीक्षण के बाद, निदान किया गया कि उसे क्षय रोग एवं एड्स है । वह याद करता है कि “डाक्टर ने कहा कि मैं मर जाऊँगा, क्योंकि दवा बहुत महँगी हैं, और अगर अधिक तकलीफ हो तो मैं वापस आऊँ। उन्होंने मुझे चार दिनों के लिए दो प्रकार की गोलियाँ दी और कुछ नहीं ।”

राजू मदद के लिए निगम द्वारा चलाए जा रहे नायर अस्पताल गया । यहाँ उसे तीन घंटे इंतजार करना पडा । उन्होंने कुछ परीक्षण किए, एक पैकेट बिस्कुट दिया, वही संदेश, और एक महीने की दवा दी। राजू कहता है कि “उसने उन पीले और सफेद गोलियों को नहीं ली क्योंकि कुछ गोलियों के बाद उसे बुखार आई। साथ ही आंशिक रूप से शिक्षित एक मित्र ने कहा कि ये क्षय रोग की दवा नहीं थीं, इसलिए मैंने उन्हें फेंक दिए ।”

दुखी और क्षीण राजू ने तब संकल्प, एक गैर सरकारी संगठन जो नशीले पदार्थों का लत रखनेवाले गरीब रोगियों की मदद करता है, के बारे में सुना । राजू ने संकल्प के व्यसन निवारण कार्यक्रम में अपना नाम दर्ज कराया । उसे मुम्बई के प्रधान क्षय रोग का सहायता केंद्र सीवरी क्षय रोग अस्पताल भेजा गया, जहाँ उसे कुछ राहत मिली ।

अस्पताल से बाहर आने के बाद, राजू को उसके मुहल्ले में चलाए जा रहे डी ओ टी एस कार्यक्रम के लिए सरकार द्वारा चलाए जा रहे क्षय रोग डिस्पेंसरी में भेजा गया, जिस सुविधा के बारे में राजू को पहले मालूम नहीं था । चिकित्सा में 60 इंजेक्शनों का क्रम शामिल था, किंतु

\* ब्रिटानिया आफ वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन 2002,80,519-20 से पुनःप्रस्तुत  
1 समाचार सम्पादक, चेन्नै

डिस्पेंसरी में सिरिंज उपलब्ध नहीं थे । राजू को अब प्रतिदिन एक प्रयोज्य सिरिंज का अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ा ।

राजू ने कहा “मैंने उस केंद्र कई कारणों से जाना छोड़ा.....लम्बी कतारें, उदासीन स्टाफ, उनके अनियमित कार्यसमय । और साथ ही, मैं उन सिरिंजों का खर्चा नहीं उठा पा रहा था। यद्यपि उन्होंने कुछ कहा नहीं, मुझे लगा कि मेरे एड्स की वजह से, और साथ ही मैं गरीब था, एवं फुटपाथ पर रहता था, स्टाफ मुझे पसंद नहीं करते थे ।”

तथापि, संकल्प के ठाकटर ने उसे एन जी ओ कार्यालय के समीप एक और डी ओ टी एस केंद्र में चिकित्सा पुनःप्रारंभ करने पर राजी कराया । चिकित्सा में

एक माह के अंतराल ने स्पष्ट किया कि उसे चिकित्सा फिर से शुरू करना पड़ेगा । संकल्प उसकी चिकित्सा का मानीटरन करता है, प्रतिदिन उसे परामर्श देता है, तथा अपने दिवा चिकित्सा केंद्र के उपयोग की अनुमति दी है ।

तथापि, संकल्प की सहायता के प्रति आभार व्यक्त किया जाता है, शराब के प्रति राजू का व्यसन कम हुआ है । उसकी सारी शक्ति अब आहार कमाने में लगी है, ताकि उसके शरीर से दवा क्षय रोग को पूरी तरह मिटा सके । दुर्भाग्यवश, वह केवल कम स्तर का अनाज एवं सड़ती सब्जियों को ही खरीद पाता है । उसके मामले में प्रोत्साहक बात एक ही है कि वह जीना चाहता है और जीने की कोशिश कर रहा है ।